1. अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास

1. एक अर्थव्यवस्था के कौन-कौन-से क्षेत्र होते हैं?

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था का प्राय: दो दृष्टियों से वर्गीकरण किया जाता है- स्वामित्व के आधार पर तथा व्यवसाय के आधार पर स्वामित्व के आधार पर किसी अर्थव्यवस्था के दो मुख्य क्षेत्र होते हैं- निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र। भारतीय अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है तथा इसमें एक संयुक्त क्षेत्र भी है। इस क्षेत्र के उद्योग या व्यवसाय में निजी उद्योगपति और सरकार दोनों की साझेदारी होती है।

व्यवसाय या आर्थिक क्रियाओं के आधार पर किसी अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य क्षेत्र होते हैं- प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र।

2. मिश्रित अर्थव्यवस्था की धारणा से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - मिश्रित अर्थव्यवस्था की धारणा अपेक्षाकृत एक नवीन धारणा है। पूँजीवाद एवं समाजवाद आर्थिक व्यवस्था के दो पृथक रूप हैं। जहाँ पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यक्ति को पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता रहती है, वहाँ समाजवादी अर्थव्यवस्था इसे समाप्त कर देती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था इन दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच का मार्ग है। इसमें पूँजीवाद एवं समाजवाद दोनों के गुण विद्यमान होते हैं। इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्र सरकार के अधीन होते हैं तथा शेष निजी उद्यम के हाथ में छोड़ दिए जाते हैं।

3. समाजवादी अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - समाजवादी अर्थव्यवस्था एक नई आर्थिक व्यवस्था है। इसके अंतर्गत उत्पादन के सभी साधन राज्य अथवा सरकार के अधीन होते हैं तथा उनपर राज्य का स्वामित्व और नियंत्रण होता है। इस व्यवस्था में अधिकतम सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण किया जाता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन का उद्देश्य लाभ अर्जित करना नहीं, वरन लोककल्याण होता है। इसमें समाज के प्रत्येक सदस्य की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया जाता है।

4. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था क्या है?

उत्तर - इसमें उत्पादन के साधनों पर किसी व्यक्ति या निजी संस्था का अधिकार होता है। इसके अंतर्गत व्यक्तिगत लाभ के उद्देश्य से आर्थिक क्रियाओं का संचालन किया जाता है। इस प्रकार, पूँजीवादी अर्थव्यवस्था आर्थिक संगठन की एक ऐसी प्रणाली है जो निजी संपत्ति, व्यक्तिगत लाभ एवं निजी प्रेरणा पर आधारित होती है। इसमें राज्य या सरकार किसी व्यक्ति के आर्थिक क्रियाकलाप में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करती। यह मूल्य प्रणाली पर आधारित बाजार अर्थव्यवस्था है। अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, कनाडा आदि विश्व के अधिकांश विकसित देशों में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था है।

5. निजी क्षेत्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - जब किसी उद्योग या व्यवसाय का संगठन एवं संचालन किसी व्यक्ति या निजी संस्था के द्वारा किया जाता है, तो उसे निजी उद्यम कहते हैं। इस प्रकार के निजी उद्यमों का समूह ही निजी क्षेत्र का निर्माण करता है। इस क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों पर निजी उद्योगपतियों का स्वामित्व होता है। यह क्षेत्र लाभ के उद्देश्य से उत्पादन एवं वितरण का कार्य करता है। निजी क्षेत्र के उद्योगपति कठिन परिश्रम करते हैं तथा प्रायः उनकी उत्पादन- कुशलता अधिक होती है। परंतु, अधिकतम लाभ अर्जित करने के लिए वे प्रायः श्रमिकों एवं उपभोक्ताओं का शोषण करते हैं। यही कारण है कि सरकार इस क्षेत्र के आर्थिक क्रियाकलापों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित करती है।

6. सार्वजनिक क्षेत्र क्या है ?

उत्तर - सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत वे उद्योग या व्यवसाय आते हैं जिनपर सरकार का नियंत्रण रहता है। इस क्षेत्र के उद्योग सरकार द्वारा संचालित एवं नियंत्रित होते हैं तथा सरकार ही उनका एकमात्र स्वामी या प्रमुख अंशधारी होती है। इस प्रकार, राजकीय अथवा सरकारी उपक्रमों के समूह को सार्वजनिक क्षेत्र की संज्ञा दी जाती है। निजी उपक्रमों के समान ही सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं। परंतु, यह क्षेत्र उत्पादन की प्रक्रिया में लोककल्याण को अधिक महत्त्व देता है।

7. आर्थिक नियोजन किसे कहते हैं? नियोजन के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर - नियोजन का अर्थ राज्य या निर्धारित सत्ता द्वारा संपूर्ण आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था के एक विस्तृत सर्वेक्षण के आधार पर उचित आर्थिक निर्णय लेना है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक प्राथमिकताओं

के आधार पर लक्ष्यों का निर्धारण कर उन्हें एक निश्चित अवधि में पूरा करने का प्रयास ही आर्थिक नियोजन है।

भारत एक अर्द्धविकसित राष्ट्र है। देश के अधिकांश नागरिकों का जीवन-स्तर बहुत निम्न है। अतः, आर्थिक विकास की दर को अधिक तीव्र बनाना हमारी योजनाओं का मुख्य उद्देश्य है। आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की प्राप्ति, निर्धनता निवारण, रोजगार के अवसरों में वृद्धि तथा सामाजिक एवं आर्थिक न्याय की स्थापना भारत में आर्थिक नियोजन के अन्य मौलिक उद्देश्य हैं।

8. मानव विकास रिपोर्ट अथवा मानव विकास सूचकांक क्या है ?

उत्तर - दो देशों के विकास के स्तर की तुलना करने के लिए प्रायः प्रतिव्यक्ति आय की धारणा का प्रयोग किया जाता है। लेकिन, यह उनके विकास के स्तर को मापने का एक अपर्याप्त मापदंड है। यही कारण है कि कुछ अर्थशास्त्रियों ने विकास की माप के लिए आय के साथ ही कई अन्य मापदंडों पर भी विचार किया है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (United Nations Development Programme, UNDP) 1990 से प्रतिवर्ष एक मानव विकास रिपोर्ट प्रकाशित कर रही है। इसमें विभिन्न देशों के विकास के स्तर की तुलना लोगों के शैक्षिक स्तर, उनकी स्वास्थ्य स्थिति और प्रतिव्यक्ति आय के आधार पर की जाती है। मानव विकास सूचकांक इन तीनों चरों का औसत है।

9. मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं का विकास से क्या संबंध है ?

उत्तर - आम आदमी को मूलभूत वस्तु / सेवा उपलब्ध कराना ही विकास का उद्देश्य है। रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य सेवा, बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा आदि जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। जिस देश में ये सुलभ हैं, वे देश विकसित हैं। मानव विकास सूचकांक में प्रतिव्यक्ति आय से नागरिक के वस्तु/सेवा खरीदने की क्षमता का पता चलता है। स्वास्थ्य की स्थिति, शिशु मृत्यु-दर, जीवन प्रत्याशा तथा साक्षरता से मानव विकास के स्तर का पता चलता है। भारत का मानव विकास सूचकांक कम है, क्योंकि हम लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को सुलभ नहीं करवा पाए हैं।

10. समावेशी विकास से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - विकास की वह प्रक्रिया समावेशी विकास कहलाती है जो विकास के लाभ को समाज के अंतिम पायदान पर स्थित लोगों तक पहुँचाने, उनका जीवन-स्तर ऊँचा उठाने तथा उन्हें समाज की

मुख्यधारा में शामिल करने का प्रयास करती है। समावेशी विकास को ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना का मुख्य लक्ष्य बनाया गया था, क्योंकि कई दशक के सार्थक प्रयास के बावजूद भी भारत के कई कमजोर वर्ग एवं भौगोलिक क्षेत्र विकास के लाभ से वंचित रह गए थे।

11. एक अर्थव्यवस्था की आधारभूत संरचना से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्य मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करना है। कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र इन सभी प्रकार की भौतिक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। परंतु, इनके संचालन के लिए कुछ आधार संरचनाएँ आवश्यक होती हैं।

आधारभूत संरचना पूँजीगत ढाँचे का वह रूप है जो अर्थव्यवस्था में सेवाएँ प्रदान करता है। इस प्रकार की संरचनाएँ सामाजिक एवं आर्थिक दो प्रकार की होती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं अन्य नागरिक सुविधाएँ सामाजिक संरचना के अंग हैं जो हमारी आर्थिक प्रक्रिया की अप्रत्यक्ष रूप में सहायता करती हैं। यातायात एवं संचार, शक्ति, सिंचाई, मौद्रिक एवं वित्तीय संस्थाएँ आर्थिक संरचना के अंग हैं, जो उत्पादन एवं वितरण का हिस्सा बनकर अपनी सेवाएँ प्रदान करती हैं।

अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास

1. आर्थिक विकास क्या है ? आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अंतर बताइए।

उत्तर - आर्थिक विकास आय या उत्पादन में वह वृद्धि है जो उत्पादन की तकनीक एवं अर्थव्यवस्था के ढाँचे में परिवर्तन से प्राप्त हो । उदाहरण के लिए, हरित क्रांति एवं भूमि सुधार के कारण कृषि उत्पादन में हुई वृद्धि को हम आर्थिक विकास का सूचक मान सकते हैं। आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाना है। इसके लिए अर्थव्यवस्था के निष्क्रिय संसाधनों को गतिशील किया जाता है। जहाँ आर्थिक वृद्धि संसाधनों के संवर्द्धन से आसानी से प्राप्त की जा सकती है, वहीं विकास एक विस्तृत और जटिल प्रक्रिया है। विकास के उद्देश्यों में प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि के साथ-साथ गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, शिशु मृत्यु-दर आदि में कमी भी शामिल हैं। अतः, विकास कल्याण एवं जीवन की गुणवत्ता से संबंधित है।

सारांश में, हम यह कह सकते हैं कि आर्थिक वृद्धि शब्द का प्रयोग विकसित राष्ट्रों के लिए किया जाता है जबकि आर्थिक विकास का व्यवहार विकासशील राष्ट्रों के संदर्भ में किया जाता है। धनी देश की आय में वृद्धि 'आर्थिक वृद्धि' है। वहीं गरीब देश की आय में बढ़ता स्तर 'आर्थिक विकास' है।

2. आर्थिक विकास की पाप के लिए प्रयोग किए जानेवाले विभिन्न मापदंडों अथवा सूचकांकों का उल्लेख करें।

उत्तर - आर्थिक विकास की माप के लिए प्रायः राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय की अवधारणाओं का प्रयोग किया जाता है। परंतु, इसमें कुछ कमियाँ हैं। सर्वप्रथम, राष्ट्रीय आय की गणना में उन आर्थिक क्रियाकलापों को सम्मिलित नहीं किया जाता है, जो बाजार से संबंधित नहीं है अथवा जिनका विनिमय नहीं होता है। इसी प्रकार, प्रतिव्यक्ति आय किसी देश के विकास के स्तर की जानकारी प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण मापदंड है। हम प्रायः प्रतिव्यक्ति या नागरिकों की औसत आय द्वारा ही दो या दो से अधिक देशों के विकास के स्तर की तुलना करते हैं। औसत आय की धारणा तुलना के लिए उपयोगी है, लेकिन यह आय के वितरण की विषमताओं को छिपा देती है।

आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, विकास लोगों के कल्याण से संबंधित है जो आर्थिक संघटकों के साथ ही कई गैर-आर्थिक घटकों से भी प्रभावित होता है। अतएव, इन्होंने विकास के स्तर की माप के लिए ऐसे सूचकों का प्रयोग किया है जिन्हें जीवन की गुणवत्ता का सूचकांक कहा जा सकता है। इनमें भौतिक गुणवत्ता का सूचक तथा मानव विकास सूचक महत्त्वपूर्ण हैं। यह किसी देश के नागरिकों के शैक्षिक स्तर, उनके स्वास्थ्य की स्थिति और प्रतिव्यक्ति आय पर आधारित है।

3. आर्थिक विकास के मुख्य क्षेत्रों का वर्णन करें।

उत्तर - आज विश्व के सभी देशों का मूल उद्देश्य आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तीव्र बनाना है। आर्थिक विकास का अभिप्राय देश के प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के कुशल प्रयोग द्वारा राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि करना है। जब किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों पर श्रम और पूँजी लगाकर उनका उपयोग किया जाता है तब उससे प्रत्येक लेखावर्ष में एक निश्चित मात्रा में वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन होता है। यह देश की राष्ट्रीय आय है।

इस प्रकार, राष्ट्रीय आय एक निश्चित अवधि में देश के कुल उत्पादन का मौद्रिक मूल्य है तथा वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन प्रक्रिया से ही इसका सृजन होता है। एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन के तीन मुख्य क्षेत्र होते हैं जो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करते हैं - प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र। प्राथमिक क्षेत्र को कृषि क्षेत्र भी कहते हैं। इस क्षेत्र के अंतर्गत कृषि एवं इसकी सहायक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है; जैसे - पशुपालन, वानिकी, मत्स्यपालन, खनन इत्यादि । द्वितीयक क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र भी कहते हैं। इसमें सभी प्रकार के निर्माण उद्योग,

विद्युत, गैस तथा जलापूर्ति आदि शामिल हैं। तृतीयक क्षेत्र को सेवा क्षेत्र भी कहते हैं। यह क्षेत्र वस्तुओं का नहीं, वरन सेवाओं का उत्पादन करता है। आर्थिक विकास के ये तीन प्रमुख क्षेत्र हैं तथा अर्थव्यवस्था के विकास के लिए इनका विकास आवश्यक है।

4. आर्थिक विकास के प्रमुख कारकों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - किसी देश का आर्थिक विकास कई तत्त्वों या कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें निम्नांकित महत्त्वपूर्ण हैं।

(i) **प्राकृतिक संसाधन** - प्राकृतिक संसाधनों से हमारा अभिप्राय जलवायु, भूमि, नदियाँ, जंगल, जीव-जंतु आदि उन सभी संसाधनों से है, जो किसी देश को प्रकृति द्वारा प्रदत्त हैं। इन प्राकृतिक संसाधनों पर श्रम एवं पूँजी के प्रयोग से ही वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है।

(ii) **पूँजी निर्माण** - किसी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में पूँजी का योगदान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होता है। प्रथम, पूँजी के प्रयोग से श्रम की उत्पादकता, अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता तथा राष्ट्रीय आय के स्तर में वृद्धि होती है। द्वितीय, पूँजी उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के प्रकार एवं गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक होती है। तृतीय, पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि होने से प्रयोग एवं अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलता है।

(iii) **तकनीकी विकास** - तकनीकी विकास का अभिप्राय उत्पादन की आधुनिक एवं श्रेष्ठ तकनीक एवं विधियों के विकास तथा प्रयोग से है। तकनीकी विकास से देश के उपलब्ध संसाधनों का कुशलतम प्रयोग होता है।

(iv) **मानवीय संसाधन** - आर्थिक विकास की दृष्टि से मानवीय संसाधनों का सर्वाधिक महत्त्व है। इसका कारण यह है कि मनुष्य उत्पादन का साधन तथा साध्य दोनों ही है। मानवीय संसाधनों का महत्त्व इस कारण और बढ़ जाता है, क्योंकि प्राकृतिक संसाधन और पूँजी निष्क्रिय होते हैं। मनुष्य ही इन संसाधनों का प्रयोग कर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करता है।

5. अर्थव्यवस्था की संरचना से आप क्या समझते हैं? इसे कितने भागों में बाँटा गया है?

उत्तर - किसी भी अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्य वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है। इनके उत्पादन से ही हमारी आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है। कृषि एवं उद्योग प्रत्यक्ष उत्पादक क्रियाओं के क्षेत्र हैं तथा इनमें सभी प्रकार की भौतिक वस्तुओं का उत्पादन होता है। परंतु, उत्पादन प्रक्रिया में

कई प्रकार की सेवाओं की भी आवश्यकता होती है। अर्थव्यवस्था की संरचना से हमारा अभिप्राय उस पूँजीगत ढाँचा से है जो अर्थव्यवस्था में सेवाएँ प्रदान करता है। इसे सेवाएँ प्रदान करनेवाली पूँजीगत संरचना अथवा आधारभूत संरचना भी कहते हैं। इस सहायक ढाँचा या संरचना के अभाव में एक अर्थव्यवस्था का संचालन संभव नहीं है।

अर्थव्यवस्था में सेवाओं को आधार प्रदान करनेवाली संरचना दो प्रकार की होती है- सामाजिक एवं आर्थिक । सामाजिक संरचना आर्थिक क्रियाओं को अप्रत्यक्ष रूप में बाहर से सहायता प्रदान करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं अन्य नागरिक सुविधाएँ उत्पादक क्रियाओं को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। अर्थव्यवस्था में सेवाएँ प्रदान करनेवाली दूसरी संरचना आर्थिक संरचना है। यातायात एवं संचार साधन, शक्ति, सिंचाई आदि आर्थिक संरचना के अंग हैं। यह संरचना आर्थिक प्रक्रिया के भीतर रहकर उनमें प्रत्यक्ष रूप से भाग लेती है।

6. एक अर्थव्यवस्था के मुख्य कार्यों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्य मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करना है। परंतु, इसके लिए कई प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का संपादन होता है। इनमें प्रमुख हैं-

(i) **उत्पादन** - किसी भी देश के नागरिकों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कई प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की जरूरत पड़ती है। एक अर्थव्यवस्था में ही उत्पादन के विभिन्न साधनों के सहयोग से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है।

(ii) **विनिमय** - सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य की आवश्यकताएँ भी बहुत बढ़ गई हैं। आज समाज का कोई भी सदस्य अपनी सभी आवश्यकताओं को स्वयं पूरा नहीं कर सकता। वर्तमान समय में, प्रत्येक व्यक्ति केवल एक ही वस्तु का उत्पादन करता है और दूसरों से विनिमय या लेन-देन कर अपनी आवश्यकता की अन्य वस्तुएँ प्राप्त करता है।

(iii) **वितरण** - आधुनिक समय में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन कई साधनों के सहयोग से होता है। अतः, राष्ट्रीय उत्पादन, अर्थात उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य का भी इन्हीं के बीच वितरण कर दिया जाता है। एक अर्थव्यवस्था ही इस बात का निर्णय लेती है कि उत्पादन के साधनों या कारकों के बीच उत्पादित संपत्ति का किस प्रकार वितरण हो।

(iv) आर्थिक विकास - अर्थव्यवस्था का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य आर्थिक विकास की गति को बनाए रखना है। इसके लिए यह वर्तमान उत्पादन के एक भाग को बचाकर उसका विनियोग करती है। इससे देश या समाज की भावी उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

7. बिहार के आर्थिक विकास की स्थिति की विवेचना कीजिए।

उत्तर - देश का एक प्रमुख राज्य होने पर भी बिहार आर्थिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़ा हुआ है। वस्तुतः, आर्थिक विकास के प्रायः सभी मापदंडों पर यह देश के अन्य सभी राज्यों से नीचे है। किसी राज्य के विकास का स्तर अंततः उसके राज्य घरेलू उत्पाद पर निर्भर करता है। देश के विकसित राज्यों की तुलना में बिहार का शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद बहुत कम है। प्रतिव्यक्ति आय विकास का एक अन्य महत्त्वपूर्ण संकेतक है जो लोगों के जीवन-स्तर को प्रभावित करता है। जनसंख्या की सघनता अधिक होने के कारण बिहारवासियों की प्रतिव्यक्ति आय भी बहुत कम है। 2011-12 में जहाँ हरियाणा और महाराष्ट्र की प्रतिव्यक्ति आय क्रमशः 1,08,345 रुपये तथा 95,339 रुपये थी वहाँ बिहार की प्रतिव्यक्ति आय मात्र 22,890 रुपये थी।

खनिज संपदा औद्योगिक विकास का आधार है। विभाजन-पूर्व खनिज पदार्थों की दृष्टि से बिहार देश का सबसे धनी राज्य था। परंतु, विभाजन के पश्चात बिहार के अधिकांश खनिज झारखंड में चले गए। इसका बिहार के औद्योगिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। पूँजी आदि के अभाव में उत्तर बिहार के चीनी, जूट, कागज आदि अधिकांश कृषि-आधारित उद्योग रुग्ण अवस्था में हैं अथवा बंद हो गए हैं। परिणामतः, राज्य की अधिकांश जनसंख्या अपने जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर है।

परंतु, विगत वर्षों में बिहार में आर्थिक विकास की प्रक्रिया तीव्र हुई है। 2006-13 की अवधि में बिहार की अर्थव्यवस्था में 12 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है। बिहार की प्रतिव्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई है। प्रतिव्यक्ति आय 2005-06 के 7,875 रुपये से बढ़कर 2012-13 में 28,317 रुपये हो गई है।

1. अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास

1. आर्थिक क्रियाएँ वे क्रियाएँ हैं जिनसे

(A) आय प्राप्त होती है।

(B) संतुष्टि प्राप्त होती है।

(C) विभिन्न वस्तुएँ एवं सेवाएँ प्राप्त होती हैं।

(D) 'क' एवं 'ग' दोनों

Ans - D

2. अर्थव्यवस्था में रोजगार प्राप्त होता है।

(A) आर्थिक क्रियाओं के संपादन से

(B) अनार्थिक क्रियाओं के संपादन से

(C) राजनीतिक क्रियाओं के संपादन से

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - A

3. अर्थव्यवस्था का प्रमुख कार्य है।

(A) लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन

(B) लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान करना

(C) लोगों को आजीविका प्रदान करना

(D) इनमें सभी

Ans - D

4. इनमें कौन प्राथमिक क्षेत्र का उत्पाद नहीं है ?

(A) कृषि उत्पाद

(B) मछली

(C) पशुधन, मवेशी और उनके उत्पाद

(D) विनिर्माण के उत्पाद

Ans - D

5. भारत की राष्ट्रीय आय में किस क्षेत्र का सर्वाधिक योगदान है ?

(A) प्राथमिक क्षेत्र

(B) द्वितीयक क्षेत्र

(C) तृतीयक क्षेत्र

(D) विदेशी क्षेत्र

Ans - C

6. भारत में अँगरेजों के शासन में क्या बढ़ा ?

(A) गरीबी

(B) अशिक्षा

(C) शोषण

(D) इनमें सभी

Ans - D

7. अँगरेजों की औपनिवेशिक नीति का परिणाम था

(A) भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों का पतन

(B) प्रतिव्यक्ति आय में स्थिरता

(C) कृषि पर जनसंख्या का बढ़ता बोझ

(D) इनमें सभी

Ans - D

8. भारत लगभग 200 वर्षों तक ब्रिटिश शासन का

(A) निवेश था

(B) उपनिवेश था

(C) निवेश साझेदार था

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

9. कोई राष्ट्र जो उपनिवेश हो, उसके आर्थिक एवं व्यावसायिक हितों का नियंत्रण होता है

(A) शासित देश के पास

(B) शासक देश के पास

(C) किसी अन्य उपनिवेश राष्ट्र के पास

(D) इनमें सभी

Ans - B

10. "अर्थव्यवस्था का अर्थ किसी राष्ट्र के संपूर्ण व्यवहार से होता है जिसके आधार पर मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वह अपने संसाधनों का प्रयोग करता है।" यह किसका कथन है?

(A) आदम स्मिथ का

(B) मार्शल का

(C) केन्स

(D) आर्थर लेविस का

Ans - D

11. "अर्थव्यवस्था आजीविका अर्जन की एक प्रणाली है।" यह किसका कथन है ?

(A) आदम स्मिथ का

(B) केन्स का

(C) आर्थर लेविस का

(D) मार्शल का

Ans - D

12. अर्थव्यवस्था के कितने प्रमुख क्षेत्र हैं ?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans - C

13. द्वितीयक क्षेत्र को कहा जाता है।

(A) औद्योगिक क्षेत्र

(B) कृषि क्षेत्र

(C) मिश्रित अर्थव्यवस्था में

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - A

14. किस अर्थव्यवस्था में संसाधनों का स्वामित्व सरकार तथा व्यक्तियों (निजी क्षेत्रों) के पास होता है ?

(A) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में

(B) समाजवादी अर्थव्यवस्था में

(C) मिश्रित अर्थव्यवस्था में

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - C

15. किस प्रक्रिया द्वारा किसी विकासशील देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है?

(A) आर्थिक वृद्धि

(B) आर्थिक विकास

(C) आर्थिक प्रगति

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

16. किस शब्द का प्रयोग केवल विकासशील अर्थव्यवस्था के संदर्भ में किया जाता है?

(क) आर्थिक विकास

(ख) आर्थिक वृद्धि

(ग) आर्थिक प्रगति

(घ) इनमें कोई नहीं

Ans - A

17. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का उदाहरण है

(A) चीन

(B) क्यूबा

(C) अमेरिका

(D) भारत

Ans - C

18. समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के संसाधनों का स्वामित्व होता है।

(A) निजी व्यक्तियों के पास

(B) देश की सरकार के पास

(C) सरकार तथा निजी व्यक्तियों के पास

(D) दूसरे देश की सरकार के पास

Ans - B

19. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की आर्थिक समृद्धि

(A) बढ़ी है।

(B) घटी है।

(C) स्थिर रही है।

(D) अस्पष्ट है।

Ans - A

20. भारत एक

(A) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था है।

(B) समाजवादी अर्थव्यवस्था है।

(C) मिश्रित अर्थव्यवस्था है।

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - C

21. किस शब्द का प्रयोग विकसित देशों के वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि के लिए किया जाता है?

(A) आर्थिक विकास

(B) आर्थिक वृद्धि

(C) आर्थिक प्रगति

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

22. किस विकास पद्धति में आगे आनेवाली पीढ़ी का ध्यान रखा जाता है ?

(A) आर्थिक प्रगति

(B) समावेशी विकास

(C) सतत धारणीय विकास:

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - C

23. यदि समाज के सभी वर्गों का जीवन स्तर ऊँचा होता है, तो इसे कहेंगे

(A) सतत विकास

(B) समावेशी विकास

(C) आर्थिक वृद्धि

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

24. आर्थिक विकास क्या है?

(A) स्वचालित होनेवाली प्रक्रिया

(B) नियोजन की प्रक्रिया

(C) परिवर्तन की प्रक्रिया

(D) परिमार्जन की प्रक्रिया

Ans - C

25. इनमें कौन आधारभूत संरचना नहीं है ?

(A) सड़क

(B) बिजली

(C) पानी

(D) उधोग

Ans - D

26. आर्थिक नियोजन किसके अनुसार होता है ?

(A) देश की प्राथमिकताओं के आधार पर

(B) देश के संसाधनों के आधार पर

(C) गरीबी के स्तर के अनुसार

(घ) इनमें सभी

Ans - C

27. भारत के योजना आयोग का अध्यक्ष होते थे

(A) राष्ट्रपति

(B) प्रधानमंत्री

(C) उपराष्ट्रपति

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

28. प्रत्येक पंचवर्षीय योजना किसके द्वारा अनुमोदित होती थी?

(A) प्रधानमंत्री द्वारा

(B) राष्ट्रपति द्वारा

(C) राष्ट्रीय विकास परिषद द्वारा

(D) देश की संसद द्वारा

Ans - A

29. प्रथम पंचवर्षीय योजना का काल था

(A) 1950-55

(B) 1947-52

(C) 1951-56

(D) 1952-57

Ans - C

30. प्रतिव्यक्ति राष्ट्रीय आय है

(A) राष्ट्रीय आय ÷ जनसंख्या

(B) सभी व्यक्तियों की आय का योग

(C) जनसंख्या ÷ राष्ट्रीय आय

(D) व्यक्ति ÷ राष्ट्रीय आय

Ans – A